

आओ मुहम्मद के बारे में जानें (2 का भाग 2)

रेटिंग: 5.0

विवरण: ?????? ??? ?????? ??????? (?? ?? ?????? ??) ?? ????? ?? ?????? ????? ??-???? ?? ??? ?? ??? 2

श्रेणी: [पाठ](#) , [पैगंबर मुहम्मद](#) , [उनकी जीवनी](#)

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

आवश्यक शर्तें

·आस्था की गवाही

उद्देश्य

·आस्था की गवाही के महत्व को जानना

·आस्था की गवाही के दूसरे भाग का अर्थ जानना।

अरबी शब्द

·????? - आस्था की गवाही।

·???????? - रात में अपनी इच्छा से की जाने वाली प्रार्थना।

उन्होंने बिना किसी अपव्यय या भव्यता के सादा जीवन व्यतीत किया। उन्होंने इस सांसारिक जीवन से मुंह मोड़ लिया। उन्होंने इसे कारागार माना, स्वर्ग नहीं!

यदि वह चाहते तो वह कुछ भी प्राप्त कर सकते थे, क्योंकि उन्हें इस खजाने की चाबियां दी गई थीं, लेकिन उन्होंने इसे लेने से इनकार कर दिया।

उन्होंने अपने परलोक के जीवन का कोई हिस्सा इस सांसारिक जीवन के साथ नहीं बदला। वह जानते थे कि यह एक रास्ता है, स्थायी नविस नहीं। वह अच्छी तरह से समझ गए थे कि यह एक समय काटने वाले स्थान है, न कि आराम की जगह। उन्होंने इसे इसके वास्तविक रूप में लिया - एक बादल जो जल्द

ही खत्म हो जाएगा।

फरि भी अल्लाह कहता है कऱिसने मुहम्मद को धनी कर दया:

“और क्या उसने नरिधन पाया, तो धनी नहीं कर दया??” (कुरआन 93:8)

मुहम्मद की पतनी आयेशा ने कहा:

“एक महीना बीत जाता था और मुहम्मद के घर मे खाना नहीं बनता था। वे दो चीजों पर नरिवाह करते थे - खजूर और पानी। कुछ अंसार [1] जो उसके पड़ोसी थे, अपनी भेड़ों का दूध भेजते थे, जसिे वह पीते और अपने परिवार को देते थे” (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि)

आयेशा ने कहा कऱिमुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीरवाद हो) के परिवार ने मदीना आने के बाद से जब तक कऱिउनका नधिन नहीं हो गया, कभी तीन दनियों तक लगातार अपनी संतुष्टके लिए रोटी नहीं खाई, जसिकी अवधलिगभग 10 वर्ष है!

इस सब के बावजूद वह आधी रात को अपने रब के प्रतकृतज्जता प्रकट करने के लिए तहज्जुद की नमाज पढ़ते थे। वह इतनी देर तक नमाज पढ़ते थे कऱिउनके पैर सूज जाते थे! जब उनसे पूछा गया कऱिविह अल्लाह की इतनी पूजा क्यों करते हैं, तो उनका जवाब था:

“क्या मैं ईश्वर का आभारी दास न बनूं?” (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि)

उनके करीबी दोस्तों में से एक उमर उनके भूखे रहने के दनियों को याद करते हुए कहा कऱिकिभी-कभी पैगंबर के पास खाने के लिए पुराने खजूर भी नहीं होते थें!

एक अन्य साथी अब्दुल्ला इब्न मसूद ने कहा कऱिएक बार जब पैगंबर अपनी नींद से जागे, तो जसिे खजूर के पत्तों से बनी चटाई पर वह सोते थे उसके नशान शरीर पर बने हुए थे। इब्न मसूद ने शकियात की:

“मेरे माता और पति आप पर कुरबान जाएं! आप हमें आपके लिए कुछ नरम क्यों नहीं बनाने देते जसिे पर आप आराम से सो सकें?”

उन्होंने जवाब दया:

‘मुझे इस दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। मैं इस दुनिया में एक सवार की तरह हूँ जो थोड़े समय के लिए पेड़ की छाया के नीचे रुक जाता है और आराम करने के बाद, पेड़ को पीछे छोड़कर अपनी यात्रा फरि से शुरू कर देता है।’ (अल-तरिमाज़ी)

इतिहास के वभिन्न वजिता खून की नदियां बहाने और खोपड़ियों के परिमडि बनाने के लिए जाने जाते हैं। पैगंबर मुहम्मद अपनी क्षमा के लिए जाने जाते हैं। आस्था की रक्षा के लिए ईश्वर के मार्ग में युद्ध को छोड़कर उन्होंने कभी अपने ऊपर अन्याय करने वाले किसी भी व्यक्ति से बदला नहीं लिया और किसी को अपने हाथ से नहीं मारा, चाहे वो कोई महिला हो या कोई नौकर।

उनकी क्षमा उस दनि देखी जा सकती थी जब उन्होंने आठ साल के बाद एक वजिता के रूप में मक्का में प्रवेश किया था।

उन्होंने उन लोगों में से कई को माफ कर दिया जिन्होंने उन्हें सताया, और उन्हें और उनके परिवार को तीन साल के लिए नरिवासन में मजबूर किया था, जिन्होंने उन्हें एक पागल, कर्वा और एक आधपित्त्य कहा था। उन्होंने अबू सुफयान को माफ कर दिया जो उन सबसे बुरे लोगों में से एक था जिसने उन्हें सताने की साजशि रची थी, साथ ही उसकी पत्नी हदि को जिसने एक भयंकर गुलाम वाहशी जो अपने युद्ध कौशल के लिए जाना जाता था उसके द्वारा पैगंबर के मुस्लमि चाचा के शव को क्षत-वक्षित करवाया और उसका कलेजा निकाल के कच्चा खा लिया था। इसकी वजह से इन दोनों ने बाद में इस्लाम स्वीकार कर लिया। ऐसा ईश्वर के सबसे महान और सबसे सच्चे दूत के अलावा और कौन हो सकता है?

मक्का के एक गुलाम वाहशी जिसने इस्लाम के शुरुआती वर्षों में अपने मालकि से पैगंबर के चाचा हमजा की हत्या के बदले में अपनी आजादी हासलि की। जब इस्लाम मक्का पहुंचा तो वह भागकर दूसरे शहर ताइफ चला गया। आखरिकार ताइफ ने भी मुसलमानों के आगे घुटने टेक दिए। उसे पता चला कि मुहम्मद इस्लाम स्वीकार करने वाले को क्षमा कर देते हैं। भले ही उसका अपराध इतना बड़ा था, वाहशी ने हमिमत जुटाई और उनके पास गया और अपने इस्लाम स्वीकार करने की घोषणा की, और मुहम्मद ने उसे माफ कर दिया! उसने वाहशी के पूर्व मालकि हदि को भी माफ कर दिया, वह महिला जिसने हमजा के शव को क्षत-वक्षित कर दिया था और इस्लाम के प्रतअपनी बड़ी नफरत के कारण उसका दिल और जगिर चबा गया था!

उसकी क्षमा हब्बर तक भी पहुंची। जब उनकी अपनी बेटी जैनब मक्का से मदीना की ओर पलायन कर रही थी, तो मक्का के मूरतपूजकों ने उसे जबरन रोकने की कोशशि की। हब्बर उनमें से एक था। उसने पैगंबर की गर्भवती बेटी को ऊंट से यात्रा करने पर मजबूर किया था। नतीजतन, उसने अपना बच्चा खो दिया! हब्बर अपने अपराध से भागकर ईरान के लिए निकल गया, लेकिन अल्लाह ने उसका दिल पैगंबर की तरफ कर दिया। इसलिए वह महान पैगंबर के सामने पेश हुआ, अपने अपराध को

स्वीकार किया, आस्था की गवाही दी, और पैगंबर ने उसे माफ कर दिया!

मुहम्मद ने चांद की तरफ उंगली उठा के उसे दो हस्सियों में बांट दिया। उन्होंने एक रात में मक्का से यरूशलेम तक की यात्रा की, सभी पैगंबरों को नमाज पढ़ाई, और फिर अपने ईश्वर से मिलने के लिए सातवे आसमान पर गए। उसने बीमारों और अंधों को ठीक किया। उनके आदेश से शैतान इंसानों के ऊपर से चले गए, अपनी उंगलियों से पानी बहाया, और उनके भोजन को अल्लाह की महिमा करते हुए सुना जा सकता था।

फिर भी वह पुरुषों में सबसे वनिम्र थे।

वह जमीन पर बैठते, जमीन पर खाना खाते और जमीन पर सोते थे।

पैगंबर के एक साथी ने बताया कि कोई अजनबी उस सभा में प्रवेश करता जहां पैगंबर मौजूद होते, तो वह पैगंबर की वनिम्रता के कारण उनको उनके साथियों में नहीं पहचान पाता था।

उनके नौकर अनस ने कसम खा के कहा था कि उसकी नौ साल की नौकरी में, महान पैगंबर ने उसे कभी भी दंडित नहीं किया और न ही उसे किसी भी चीज के लिए दोषी ठहराया।

उनके साथ के लोगों ने उन्हें इतना वनिम्र बताया कि एक छोटी लड़की भी उनका हाथ पकड़ कर जहां चाहे वहां ले जा सकती थी। वह गरीब बीमार मुसलमानों से मिलने और उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए जाते थे। वह कमजोरों की सहायता करने और उनके लिए प्रार्थना करने के लिए कारवां के पीछे रहते थे। वह वधिया या गरीब व्यक्ति, या यहां तक कि एक दास के साथ चलने में भी नहीं हचिकचाते थे। यहां तक कि उन्होंने दासों के खाने के नमंत्रण को भी कभी नहीं ठुकराया जहां उन्हें खाने के लिए जौ की रोटी के अलावा और कुछ नहीं मलिता था।

वह अपने परिवार के लिए सबसे अच्छे पुरुष थे। आयशा ने उनकी वनिम्रता का वर्णन किया:

“वह अपने घर के काम और मदद करने में व्यस्त रहते थे, और जब प्रार्थना का समय आता तो वह वजू करते और प्रार्थना के लिए जाते थे। वह अपनी चप्पल खुद मरम्मत करते और अपने कपड़े खुद सलिते थे। वह एक साधारण इंसान थे... अपनी भेड़ों को दुहना करते, और अपने काम खुद करते थे।”

(सहीह अल-बुखारी)

वास्तव में वह अपने परिवार के सभी लोगों में सर्वश्रेष्ठ थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि लोग उनसे दूर नहीं रह पाते थे!

वह युद्ध के मैदान में सभी पुरुषों में सबसे बहादुर, सबसे नडिर और सबसे साहसी थे। अंसार के शूरवीर अल-बारा ने आश्चर्य से कहा:

“जब युद्ध भयंकर हो गया, तो हमने पैगंबर से सुरक्षा मांगी और हम में से सबसे बहादुर वह थे जसिने युद्ध में उनके साथ कदम रखा।” (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि)

अरब के बहादुर व्यक्ति और खैबर के वजिता अली ने पैगंबर की वीरता का वर्णन किया:

“आपको मुझे बदर की लड़ाई के दनि देखना चाहिए था, क्योंकि हिमने पैगंबर से सुरक्षा मांगी थी। वह दुश्मन के सबसे करीब थे और उस दनि उन्हें युद्ध का सबसे ज्यादा आनंद आया था!” (शर अल-सुन्नत)

अल्लाह के ऐसे नेक पैगंबर थे जिन्हें हमें खुद से ज्यादा प्यार करना चाहिए और जिन्हें ईश्वर ने वर्णित किया है:

“तुम्हारे लिए ईश्वर के दूत के रूप में उत्तम आदर्श है अनुसरण करने के लिए” (कुरआन 33:21)

ईश्वर उनकी नैतिक पूर्णता को बताते हैं:

“नून और शपथ है कलम की तथा उसकी जसि वो लिखते हैं।

नहीं है आप (मुहम्मद), अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल!

तथा नश्चय प्रतफिल (बदला) है आपके लिए अनन्त। तथा नश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।”
(कुरआन 68:1-4)

उनके बारे में सब कुछ - उनके गुण, चरित्र, बातें और अनुकरणीय जीवन - एक व्यक्ति को विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करता है जैसा कि कुरआन घोषित करता है:

“तुम्हारे लिए ईश्वर के दूत के रूप में उत्तम आदर्श है अनुसरण करने के लिए” (कुरआन 33:21)

फुटनोट:

[1]

अंसार : मदद के लिए आगे आए...पैगंबर द्वारा मदीना में उन मुस्लिम नविसरियों को दिया गया एक नाम जिन्होंने मक्का के प्रवासियों (या मुहाजिरिन) को स्वीकार किया और उन्हें अपने नए घर में समायोजित होने में मदद की।

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/6>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।